E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बौद्ध धर्म के पालि साहित्य का वर्णन

डॉ. सुरेश

असिसटेंट प्रोफेसर इतिहास,संस्कृति पुरातत्त्व विभाग

चौधरी रणवीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द

Paper Rcevied date
05/04/2025
Paper date Publishing Date
10/04/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15546252

प्राचीन भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ईसा पूर्व का विशेष महत्व है। एक और जहाँ लौह युग की शुरूआत के साथ भौतिक जीवन तथा सामाजिक संगठन में आये परिवर्तनों ने तथाकथित द्वितीय शहरी क्रांति की शुरूआत की यहाँ प्राचीन जनजातीय संस्थाओं की समाप्ति के साथ-साथ नवीन धार्मिक-सामाजिक सिद्धांतों की भी शुरूआत हुई जिन्होंने वेद, ग्रहस तथा ग्राहमणवाद को चुनौती दी। इन्हीं धर्मों में, बौद्धधर्म की शुरूआत महात्मा बुद्ध ने की, जिन्होंने जनभाषा पालि में समाज तथा संस्कृति को एक नई व्याख्या विश्व समाज के सामने प्रस्तुत की।

गौतम बुद्ध का जन्म 567 ई०पू० में, कपिलवस्तु के निकट लुम्बनी जो कि नेपाल में हैं, एक शाक्य क्षत्रिय परिवार में हुआ। उनके पिता कपिलवस्तु के निर्वाचित राजा थे, साथ ही शाक्य संघ के प्रधान भी थे। यचपन से ही गौतम बुद्ध साधु स्वभाव के थे। उन्नतीस वर्ष की गृहत्याग कर वे निर्माण की तलाश में निकल पड़े। पैतिस वर्ष आयु में की आयु में उन्हें बोधगया में निर्माण की प्राप्ति हुई तथा अस्सी वर्ष की आयु में कुशी नारा में लगभग 483 ई०पू० में उन्हें महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई। लगभग पचास वर्ष तक उन्होंने दक्षिणी बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में मगध तथा कौशल राज्यों के साथ-साथ अन्य राज्यों में बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का पालि भाषा में प्रचार प्रसार किया। महात्मा युद्ध में ना केवल लोगों के बीच प्रेम, अहिंसा, सत्य का प्रचार प्रसार किया बल्कि इस कार्य हेतु भिक्षु एवं भिक्षुणीयों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित भी किया, जिससे बौद्ध धर्म के सन्देश को आगे पहुंचाया जा सके।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पालि साहित्य इस बात की ओर इशारा करते हैं कि बुद्ध के जीवन काल में ही बौद्ध धर्म की शिक्षायें एवं सिद्धांत मध्यदेश की सीमायें पार कर दक्षिणी क्षेत्रों में पहुंच चुके थे। बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुणी इन सभी क्षेत्रों में घूम-घूम कर बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करते थे। एक तरफ जहां वैश्य समुदाय ने अपनी उदारता बौद्ध धर्म के प्रति दिखाई, वहाँ कोशल नरेश प्रसेनजित, मगध नरेश बिम्बिसार, अवन्ति नरेश चण्ड प्रद्योत आदि यौद्ध धर्म के राजकीय संरक्षक के रूप में सामने आये। युद्ध के जीवनकाल में केवल एक बार भिक्षुओं के यीच मनमुटाव की स्थिति उत्पन्न हुई जो कि तुरंत ही शांत हो गई, लेकिन महात्मा बुद्ध को मृत्यु के उपरांत उनकी शिक्षाओं तथा सिद्धांतों को लेकर किसी तरह के फेरवदल तथा मनमुटाव से बचने तथा युद्ध की मौलिक शिक्षाओं तथा सिद्धांतों को सुरक्षित रखने के लिए इस बात पर जोर दिया गया कि महात्मा बुद्ध की मौखिक शिक्षाओं को लिपिवद्ध किया जाए। इसी दृष्टिकोण से महात्मा बुद्ध की मृत्यु के तीन माह के उपरांत, आजात शत्रु के आठवें शासनकाल में लगभग पांच सौ अर्हतों में राजगीर में प्रथम संगीति का आयोजन किया। इस संगीति में बुद्ध के ये सभी शिष्य शामिल थे, जिन्होंने उनसे शिक्षा गृहण की थी। प्रथम संगीति में बौद्ध शिष्य उपाली ने धम्म तथा विनय से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर दिया। इन्हें त्रिपिटक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध किया गया। इसी तरह की दूसरी संगीति क्रमशः सौ वर्ष के उपरांत वैशाली में हुई, जिसमें विनय सम्बंधी सिद्धांतों को लेकर काफी बहस हुई। तीसरी संगीति सम्राट अशोक के काल में पाटलीपुत्र में हुई, जिसकी जानकारी सिंहली स्त्रोतों से मिलती है। चौथी संगीति, श्रीलंका में राजा यट्टगामणी अभय के काल में हुई, जिसमें स्थविरवाद को लेकर चर्चा हुई। भारत में चौथी संगीति, कुषाण शासक कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के कुण्डलवन में हुई।

इन तमाम संगीतियों का महत्व इस यात में है कि इनमें महात्मा युद्ध के मौखिक सिद्धांतों को लिपिबद्ध किया गया, लेकिन साथ ही साथ सतभेदों के कारण बौद्ध धर्म की नई शाखाओं का भी जन्म हुआ। अशोक के समय तक इस तरह की शाखाओं की संख्या अठारह तक पहुंच चुकी थी। और इनमें लगातार बढ़ोतरी होती रहीं।

महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों को जिस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया उसे त्रिपिटक के नाम से जाना जाता है। इन त्रिपिटकों में विनयपिटक, सुतपिटक तथा अभिधम्मपिटक आते हैं, जिनमें महात्मा बुद्ध तथा यौद्ध धर्म एवं संघ के सिद्धांतों का क्रमवार वर्णन मिलता है। अभिलेखीय साक्ष्यों से भी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस बात की पुष्टि होती है, विशेषकर भारहूत तथा सांची के दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अभिलेखों से यह पता चलता है। कि महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं तथा सिद्धांतों को लिपिबद्ध किया जा चुका था।

सुतपिटक के बारे में इतिहासकारों का मानना है कि इस ग्रन्थ से युद्धकालीन भारत की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र तथा धर्म के बारे में अति महत्वपूर्ण तथा गहन जानकारी मिलती है। राजनीतिक रूप से इस ग्रन्थ से हमें उस समय के सोलह महाजनपदों तथा अन्य गणतांत्रिक राज्यों के बारे में जानकारी मिलती है। साथ ही साथ इन राज्यों के आपसी रिश्तों के बारे में भी ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। विशेषकर कौशल तथा मगध राज्य के सम्बंधों के बारे में काफी विस्तारपूर्वक जानकारी मिलती है। सुतपिटक तथा उसके विभिन्न निकार्यों से महात्मा बुद्ध के साथ इन राज्यों के सम्बंधों तथा बौद्ध धर्म हेतु को मिले राजकीय संरक्षण तथा इन राज्यों द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार किये गए व्यवहारिक कार्यों की भी जानकारी मिलती है। इस दृष्टि से दीघनिकाय, संयुक्त निकाय तथा मज्झिमनिकाय का विशेष महत्व है।

सुतपिटक तथा इसके खुददकनिकाय, संयुक्त निकाय तथा मज्झिम निकाय से हमें युद्ध कालीन समाज तथा अर्थव्यवस्था के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है। इन निकायों से इस बात का पता चलता है, कि युद्धकालीन भारत में अर्थव्यवस्था का काफी विस्तार हुआ, विशेषकर कृषि क्षेत्र में काफी विकास हुआ, जिससे सामाजिक-राजनीतिक के क्षेत्र में अनेक परिवर्तनों का सूत्रपात हुआ। कृषि क्षेत्र में लोहे के हल के साथ-साथ अनेक तकनीकी परिवर्तनों की जानकारी मिलती T संयुक्त निकाय के एक वर्णन में युद्ध द्वारा कृषि के महत्व को भी जानकारी मिलती है। कृषि के साथ-साथ कृषिभूमि तथा कृषि धन के रूप में पालतू जानवरों के बारे में भी सुतपिटक तथा इसके सम्बद्ध निकायों से विस्तृत एवं महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचनायें मिलती हैं। इसी क्रम में वैदिक कर्मकांड तथा यज्ञों में पशुधन की हानि तथा पशुधन सुरक्षा को लेकर यहीं व्यापक जानकारी इन निकायों में मिलती महात्मा बुद्ध ने यज्ञों में पशु यति को व्यर्थ मानते हुए इनकी कठोर निंदा की थी। सुतपिटक के अंगुत्तर निकाय से शिल्प तथा व्यापार के बारे में सारगर्भित जानकारी मिलती है। अंगुत्तर निकाय से युद्ध कालीन भारत में शिल्पों के विभिन्न प्रकार तथा पेशों की जानकारी ही नहीं मिलती यल्कि विभिन्न आर्थिक गतिविधियों की भी विस्तारपूर्वक जानकारी मिलती हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इससे उस समय की अर्थव्यवस्था की कड़ियों को जोड़ने में मदद मिलती है। अंगुतर निकाय तथा दीर्घ निकाय से विविध प्रकार की भूमि तथा भूमि आधारित सम्बंधों की जानकारी मिलती है। मज्झिम निकाय से ग्रहमदेव आदि भूमि को सूचना मिलती है। मज्झिमनिकाय से सामाजिक स्तरीकरण की भी जानकारी मिलती है। सामाजिक स्तरीकरण के आधार पर सामाजिक, आर्थिक हैसियत की भी जानकारी अंगुत्तर निकाय से मिलती हैं।

सुतपिटक के विभिन्न निकायों से युद्धकालीन वर्णव्यवस्था की यहाँ रोचक जानकारी मिलती है। विशेषकर अगुत्तर निकाय वर्ण व्यवस्था का से वर्णन करते हुए, वर्णव्यवस्था के आधार पर विस्तार सम्बंधों के बारे में जरूरी सूचना प्रदान करते हैं। संयुक्त निकाय तथा अंगुतर निकाय समाज में क्षेत्रीय ब्राह्मण वैश्य, शुद्र के रूप में विभाजन करते हैं। विशेषकर ब्राह्मण तथा क्षत्रियों के यांच वर्ग संघर्ष के सन्दर्भ पालि निकायों में मिलते हैं। हालांकि बुद्ध ने संघ में सभी को धर्म, जाति, जन्म से परे समानता प्रदान की, लेकिन इन निकायों से पता चलता है कि सभी वर्णों की स्थिति समाज में बराबर नहीं भी विशेषकर वैश्य तथा शुद्रों की स्थिति समाज में निम्न भी साथ ही कुछ जातियां ऐसी भी थी जिन्हें छुआछूत तथा प्रदूषण का कारण माना जाता था, विशेषकर अंगुत्तर निकाय से इस बारे में सारगर्भित जानकारी मिलती हैं। सुतपिटक के विभिन्न निकायों से गहपति आदि नवीन पेशेवर श्रेणी का विस्तृत वर्णन मिलता है। युद्धकालीन भारत में गृहपति को सामाजिक स्थिति काफी ऊपर थी। तथा इन गहपतियों ने युद्ध धर्म को विस्तृत संरक्षण तथा मदद प्रदान की। इस तरह के गहपतियों में अनाथपिंडक का नाम पालि निकायों में मिलता है।

सुतपिटक के अंगुतर निकाय से युद्धकालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति एवं दशा का भी पता चलता है। हालांकि बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद के आग्रह पर महिलाओं को संघ में शामिल करने की अनुमति प्रदान की, लेकिन संघ तथा संघ से बाहर स्त्रियों को अधीन स्थिति का बोध अंगुतर निकाय से मिलता है। उनकी तुलना शुद्रों से की गई थी तथा उन्हें अविश्वसनीय मानते हुए उनके जीवन पर पिता पुत्र, पति का शास्त्रीय बंधन पालि निकायों में भी मिलता है।

सुतपिटक तथा उससे सम्बद्ध निकायों से समाज, अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त युद्धकालीन विभिन्न धर्मो की जानकारी के साथ-साथ उनके टकराव के बारे में भी जानकारी मिलती है। अंगुत्तर निकाय

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में न केवल वैदिक धर्म, ब्रहम तथा कर्मकांड की आलोचना मिलती है बल्कि आजीवक तथा मक्खली गोशाल तथा अन्य समकालीन सम्प्रदायों की आलोचना इस बात को दर्शाती है, कि सब कुछ धार्मिक सम्भाव से नहीं हो रहा था। धार्मिक प्रतिस्पर्धा की व्यापक जानकारी अगुत्तर निकाय में मिलती है।

सुतपिटक के अलावा पालि साहित्य में विनय पिटक का भी महत्व है। यौद्ध धर्म में संघ तथा संघ में अनुशासन का यहा महत्व है। संघ तथा सामान्य अनुयायियों को अनुशासित करने हेतु जो नियम महात्मा युद्ध ने बनाये, उन्हें महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के उपरांत विनय पटक में लिपिबद्ध किया गया। विनय पटक से बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुणियों को संघ में किस प्रकार से जीवन यापन करना था इसके नियमों की जानकारी मिलती है। बौद्ध धर्म की अन्य स्थापित धर्मों के साथ अच्छी खासी प्रतिस्पर्धा के चलते महात्मा बुद्ध ने संघ के अन्दर भिक्षुओं के व्यवहार को काफी विनियमित किया हुआ था और सभी को सख्ती से इनका पालन करना होता था। संघ में रहने के नियम यई कठोर थे विनयपिटक में 'प्रतिमोक्ष' के रूप में आठ तरह के अपराध मिलते हैं जिन्हें करने पर संघ में रहने वाले भिक्षु एवं भिक्षुणियों की सजायें निर्धारित की गई थी। अपराध को करने पर क्षणिक सजा के प्रावधान के साथ-साथ गम्भीर अपराध पर संघ से बाहर निकाले जाने के प्रावधान अर्थात् 'पराजिका धर्म' की जानकारी विनयपिटक से मिलती है। हालांकि समय के साथ, जैसे जैसे बौद्ध सम्प्रदायों की संख्या यहीं वैसे-वैसे इन अपराधों की संख्या भी यदती चली गई। याद के समय में इनकी संख्या जहां भिक्षुओं के नामले में 218 से 263 के बीच मिलती है, वहाँ भिक्षुणियों के बारे में अपराधों की संख्या 279 से लेकर 380 तक मिलती है। विनयपिटक से इस यात की भी जानकारी मिलती है, कि जो भिक्षु अनुशासन का सख्ती से पालन करते थे उनकी प्रशंसा की जाती थी। वास्तव में संघ की एकता को बनाये रखने के लिए ये अनुशासनात्मक कदम अनिवार्य थे।

एक और जहां 'प्रतिमोक्ख' व्यक्तिगत रूप से भिक्षु एवं भिक्षुणी की जीवन शैली को निर्धारित करते थे, वहीं दूसरी ओर विनयपिटक से 'करमवाचना' के तौर पर संघ की सामुदायिक जीवन पद्धति के संचालन की जानकारी मिलती है। विनयपिटक से लगभग चौदह 'करमणाचना' नियमों की जानकारी मिलती है। जिसमें संघ प्रवेश (प्रवज्या) से लेकर उपसम्पदा आदि की जानकारी तथा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नियम मिलते हैं। विनय साहित्य में सूत्र विभंग तथा स्कधक भी मिलते हैं। सूत्रविभंग में अनेक तरह के अपराधों से सम्बंधित कहानियां तथा टीकायें मिलती हैं। इनसे युद्धकालीन समाज में होने वाले अपराधों की विस्तृत जानकारी मिलती है। स्कांक, वास्तव में संघ के संगठन से संबंधित नियम थे। स्कंच के बीस विभाजन मिलते हैं। जिसमें संघ प्रवेश से लेकर विभिन्न) तुओं में रहने के नियमों के साथ-साथ इनमें महात्मा बुद्ध के जन्म तथा जीवन की जानकारी मिलती है। इसमें बुद्ध के महापरिनिर्वाण तथा राजगृह में हुई प्रथम बौद्ध संगीति की भी जानकारी मिलती है।

पालि साहित्य में कुछ संकलन ऐसे भी मिलते हैं, जिनका स्वतंत्र अस्तित्व प्रतीत होता है। सुत पिटक का खुद्दक निकाय इसी तरह का पालि ग्रंथ है। खुद्दक निकाय एक विस्तृत ग्रंथ है, जिसमें सुत निकाय जैसे ग्रंथ भी सम्मिलित है। खुद्दक निकाय तथा सुत निकाय दोनों ही विकसित अवस्था की रचनायें है। खुद्दक पाठ बौद्ध संघ व्यवस्था तथा धर्म के लौकिक पक्ष की विकसित अवस्था की रचना जात होती है। विमानवत्थु तथा पेतवत्थु भी इसी अवस्था के परिचायक है।

पालि साहित्य में सुतनिपात का इतिहास दृष्टि से यहा महत्व T इससे सामाजिक आर्थिक जीवन के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। उदान तथा इतिवृतक युद्धकालीन धार्मिक स्थिति तथा समकालीन अन्य धार्मिक सम्प्रदायों पर समालोचनात्मक जानकारी देते हैं। धम्मपद में मूलतः बौद्ध सूक्तियाँ मिलती है। इसमें उन आदर्शों की भी जानकारी मिलती है, जिनके पालन से व्यक्ति अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सकता है। इसी तरह भेरगाथा और भेरी गाथा, यद्यपि याद के संकलन है लेकिन बुद्ध कालीन स्थिति को विस्तृत ढंग से जानने में सदद करते हैं, जिनके आधार पर बुद्धकालीन समाज तथा अर्थव्यवस्था को जानने में मदद मिलती है। जातक कथायें भी युद्धकालीन समाज तथा आर्थिक व्यवस्था के स्वरूप को गढ़ने में काफी उपयोगी साबित होती है।

अभिधम्मपिटक, युद्ध की शिक्षाओं के दार्शनिक पहलू को उजागर करता है। इसमें बौद्ध धर्म के तकनीकी पहलूओं पर विस्तृत जानकारी मिलती है। इतिहासकारों को दो अलग-अलग अभिधर्म पिटक मिलते हैं। एक शेरवादियों का प्रतिनिधित्व करता है दूसरा सर्वास्तिवादिनों का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन दोनों में ही सात अध्याय मिलते हैं जो बौद्ध धर्म के दार्शनिक पहलुओं को उजागर करते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वास्तव में पालि साहित्य एक विस्तृत साहित्य है जो युद्ध कालीन समाज तथा संस्कृति को जानने का उपयोगी स्त्रोत है। हालांकि इसकी रचना महात्मा बुद्ध की मृत्यु के काफी समय बाद हुई और कुछ साहित्य तो लगभग चार सौ वर्ष बाद लिखा गया जिसमें बुद्ध की शिक्षाओं तथा सिद्धांतों के साथ छेड़छाड़ की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। लेकिन फिर भी यह कहा जा सकता है कि इस पालि साहित्य से जो विस्तृत जानकारी मिली उसी के आधार पर महात्मा बुद्ध के जीवन, उनके धर्म तथा उस समय के समाज, राजनीति, भूगोल, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति की कड़ियों को ऐतिहासिक दृष्टि से जोड़ा जा सका, जिसकी पुष्टि पुरातात्विक तथा अभिलेखीय साक्ष्यों से भी होती है।

संदर्भ सूची

1. याशम, ए एल सम्मा- ए कल्चरल हिस्टरी आफ इंडिया, दिल्ली, 1975

2. देवानंद श्री, शोशल आसपेक्ट आफ अल दिइन्न, सिंगापुर, 2000

3. आपर, रोमिला, भारत का इतिहास, अंक 1, दिल्ली, 1982

4. डेविड रेस, युविइस्ट इंडिया, दिल्ली, 1970

5. गोवंस, सी० डब्ल्यू, फिलासफी आफ बुद्धा, लंदन, 2003

6. शर्मा, आर० एस० इंडियाज एंशेज पास्ट, आक्सफोर्ड, 2005

7. कौसम्बी, डी० डी० द कल्चर एंड सिविलाइजेशन आफ एशियंट इंडिया इन हिस्टोरोकल आऊटलाइन, दिल्ली, 2003

8. ओम्बेट, गेल, बुद्धिज्म इन इंडिया, दिल्ली, 2003

9. अम्बेडकर बी० आर०, बुद्धा एंड हिज धम्मा, दिल्ली, 1957

10.यापट, पी० वी० 2500 इयर्स आफ बुद्धिज्म, दिल्ली, 1997

11.वर्मा, बी० पी० अर्ली बुदिग्न एंड इटस ओरिजन, दिल्ली, 1973

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

12.हजारा, के. एल. व राइज एंड डेक्लाइन ऑफ युविन्स इन इंडिया, दिल्ली, 1989

13.**गोयल, एस०आर० ए हिस्टरी ऑफ इंडियन बुदिज्म, मेरठ** 1987

14.**अहीर, डी०सी० युदिन्न इन नार्थ इंडिया, दिल्ली**, 1989

.